Chap-2

द्वितीय अध्याय :

(I) साठोत्तरी गुजराती कहानी के प्रमुख हस्ताक्षर

(II) साठोत्तरी हिन्दी कहानी के प्रमुख हस्ताक्षर

द्वितीय अध्याय :

(1) साठोत्तरी गुजराती कहानी के प्रमुख हस्ताक्षर

(१) रघुवीर चौधरी

(२) गुलाबदास ब्रोकर

(३) मधुराय

(४) जयंति दलाल

(५) चुनीलाल मडिया

(६) इश्वर पेटलीकर

(७) कुन्दनिका कापड़िया

(८) शिवकुमार जोषी

(II) साठोत्तरी हिन्दी कहानी के प्रमुख हस्ताक्षर

(१) कमलेश्वर

(२) उषा प्रियंवदा

(३) मोहन राकेश

(४) रांगेय राघव

(५) ज्ञान रंजन

(६) मन्नू भंडारी

(७) दूधनाथ सिंह

(८) राजेन्द्र यादव

(९) चन्द्रकिरण सौनरेक्सा

(१०) दीप्ति खंडेलवाल

(११) राजी शेठ

(१२) ममता कालिया

(I) साठोत्तरी गुजराती कहानी के प्रमुख हस्ताक्षर

रघुवीर चौधरी :

रघुवीर चौधरी का जन्म 5 दिसम्बर, 1938 को बापुपुरा गॉव में हुआ था। उनकी माता का नाम जीतीबहन और पिता का नाम दलसिंह था। उनकी शिक्षा माणसा में हुई। आपने 1960 में बी.ए. की परीक्षा प्रथम वर्ग में पास की और 1962 में एम.ए. पास किया। "हिन्दी और गुजराती के क्रियात्मक धातुओ का तुलनात्मक अध्ययन' इस विषय पर संशोधन कार्य किया। 1962 से 1965 तक गुजरात विद्यापीठ में अध्यापन का कार्य किया। एच.के. आर्ट्स कॉलेज में हिन्दी और जनरल एजूकेशन के प्रोफेसर रहे। सम्प्रति वह गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद के भाषा भवन के हिन्दी विभाग में कार्यरत हैं। रघुवीरभाई साहित्य सर्जक हैं, विवेचक हैं, किन्तु प्रमुख रूप से उपन्यासकार हैं। निरंजन भगत ने 'सर्वतोमुखी सर्जन' के रूप में उनका सम्मान किया था। बत्तीस साल पहले बड़ौदा की 'न्यू ईरा हाईस्कूल' में उनका 'कवि' के रूप में सम्मान हुआ था। राधेश्याम शर्मा के सहयोग से 'गुजराती नवलकथा' के विवेचनकार के रूप में आलेख तैयार किया था। आधुनिक कविता और कहानी में उनकी दिलचश्पी दिखाई देती है।

कहानी सर्जन की प्रक्रिया में रघुवीरजी ने परिवार में उठनेवाले प्रश्न, तनाव, विवाद आदि को अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है। उनका प्रसिद्ध कहानी संग्रह 'गेरसमज' में 'एक सुखी कुटुंबनी वात' कहानी में पति-पत्नी के बीच

ज्योतिष शास्त्र को लेकर तनाव उत्पन्न होता है। पति के विचार से ज्योतिष शास्त्र एक विज्ञान के अलावा कुछ नहीं है। बाद में एक दिन वह जिस मिल में काम कर रहा था उसके दो महिने से बंद होने के कारण दूसरी नौकरी की खोज करते-करते वह उसी ज्योतिष के पास पहुँच जाता है। ज्योतिष बताता है कि वही नौकरी आपको वापस मिलेगी। इसी बात को लेकर पति-पत्नी के बीच तनाव पैदा होता है। इसी संग्रह में एक और कहानी 'बाळको' में भी पति-पत्नी के बीच बच्चों की वजह से तनाव उत्पन्न होता है। उनकी अन्य कहानियाँ 'छटकी गयेलो माणस', 'बहार कोई छे','रंग', "हुं नहोती कहेती' कहानियाँ भी रोजबरोज की घटनाओं से जुडी हुई हैं।

रघुवीर चौधरी ने साहित्य की सभी विधाओं में अपना योगदान दिया है।

नवलकथा : पूर्वराग, अमृता, आवरण, एकलव्य, तेडागर, परस्पर, वेणु वत्सला, उपरवास, सहवास, अंतरवास, लागणी, श्रावणी राते, रुद्रमहालय, कंडक्टर,पंचपुराण, बाकी जिन्दगी, प्रेम अंश, वचलु फळियुं, गेरसमज आदि।

नवलिका (कहानी) : आकस्मिक स्पर्श (१९६६), गेरसमज (१९६८), नंदीघर (१९७७), बहार कोई छे (१९७२), अतिथिगृह (१९८८) आदि प्रसिद्ध कहानी संग्रह हैं।

नाटक : अशोकवन, झुलता मिनारा, डिम लाइट, सिकंदर सानी, त्रीजो पुरूष आदि।

कविता : तमसा, बचावनामुं, वहेतां वृक्ष पवनमां

रेखाचित्र : सहरानी भव्यता, तिलक करे रघुवीर

विवेचन : अद्यतन कविता, वार्ता विशेष, गुजराती नवलकथा (राधेश्याम साथे), दर्शकना देशमां, जयंति दलाल - नाटक और नाटको, अनुभवनी शक्तिने शब्दनुं सौंदर्य आदि।

संपादन : स्वामिनारायण संतसाहित्य, रंगभर[1] सुंदर श्याम रमे (हिन्दी)

रघुवीरजी के पाँच कहानी संग्रह प्रसिद्ध हैं जिनमें आकस्मिक स्पर्श, गेरसमज, बहार कोई छे, नंदीधर, अतिथिगृह। इन संग्रहों में भीतर के अनुभवों को मुखरित किया गया है। इनकी बाईस कहानियों का संकलन "रघुवीर चौधरीनी श्रेष्ठ वार्ताओ" (1986) में हुआ। रघुवीरजी की इन कहानियों में सामाजिक संदर्भ सामने आते हैं। उनकी कहानियाँ अधिकतर जिंदगी के साथ जुड़ी हुई होती है। रघुवीरजी ने कई स्वलिखित नाटकों में स्वयं भी काम किया। उनके नाटक हैं - 'अशोकवन' (1970), 'झुलता मिनारा' (1970), 'सिकंदर सानी' (1979), 'नजीक' (1985) और 'डिमलाइट' (1982) प्रविण जोशी द्वारा अभिनित एक सफल नाटक था। रघुवीरजी ने कटार लेखन में भी काम किया है। अभी आप गुजराती दैनिक 'संदेश' में 'वैशाखनंदन नी डायरी' लिख रहे हैं। 'जन्म भूमि' में भी 'तिलक करे रघुवीर' लिख रहे हैं। उन से पहले 'जनसत्ता' में 'यौवन नी आसपास', 'मने कहेवा दो', 'अरसपरस' और 'कलागुर्जरी' नाम से लिख रहे थे।"[2] गुजरात विश्वविद्यालय द्वारा 1969-70 में निबंध प्रतियोगिता में उनके निबंध

'गुजराती प्रजाजीवन ना सर्वतोमुखी जीवन पर गाँधीजीना जीवन अने कार्यनो प्रभाव' पर उन्हें 1000 रूपये का प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

रघुवीरजी की सर्जनकला बहुत ही विस्तृत है। एक सर्जनकर्ता होने के कारण उनका लेखन सतत चलता ही रहा है। राधेश्याम शर्मा - "नवलकथा ही नहीं, कविता, वार्ता, नाटक और विवेचन सभी स्वरूपों के ऊपर अपना ज्यादा से ज्यादा ध्यान लगाकर एक नई पीढ़ी की स्थापना का आक्षेप रघुवीरजी के ऊपर रख दिया गया है।"[3] बहुत लिखा है इसीलिये वे गुजरात के 'खाडेकर' बन सकते हैं।

मधुराय :

मधुरायजी का पूरा नाम मधुसूदन वल्लभदास ठाकर है। उनका जन्म सौराष्ट्र जिले के जाम खंभालिया गाँव में 16 जुलाई 1942 को हुआ था। उनकी पूरी शिक्षा कलकत्ता विश्वविद्यालय में हुई। उन्होंने बंगाली और उर्दू का भी अध्ययन किया है। उनकी कहानियों में कलकतिया वातावरण का साया नजर आता है। वे मुंबई-अहमदाबाद आदि महानगरों में रह चुके हैं। वे गुजराती साहित्य में प्रयोगलक्षी नाटककार के रूप में बहुचर्चित होने के साथ-साथ नई पीढी के एक वास्तविक कहानीकार और उपन्यासकार भी हैं। मधुराय सत्रह-अठारह साल से ही कहानी लिखते थे और कहानी स्पर्धाओं में भाग लेते थे। कुछ समय के लिए

उन्होंने दैनिक 'संदेश' और साप्ताहिक 'निरीक्षक' में काम किया। अहमदाबाद की एडवर्टाइजिंग कंपनी नवनीतलाल एण्ड कंपनी में कापीराइटर के रूप में काम किया। इस दौरान उन्होंने नाटकों में सक्रिय रस लिया और अपने मित्रों के साथ 'आकंठ' 'साबरमती' नामक संस्था की स्थापना की।[4]

मधुराय की कहानियों की नायिकाएँ अधिकतर परिवार के लिए अपने आप से जूझती और परिवार का बोझ उठाती हुई नजर आती है। उन्होंने परिवार में उठती हुई हर समस्याओं के ऊपर कहानियाँ लिखी हैं। 'रूपकथा' (1972) नामक संग्रह की एक कहानी 'एक सोमवार' में भारतीय संयुक्त परिवार के यथार्थ को निरूपित किया गया है। व्यक्ति की हररोज की जीवन शैली, घटनाएँ और उनके साथ-साथ अन्तरजगत में चलती प्रत्येक हलचल को मधुराय तटस्थ होकर व्यक्त करते हैं। इनकी एक और कहानी 'शेष प्रहर' किशोरावस्था के प्रेम प्रसंग पर लिखी गई है। उनकी एक और कुसुम-सुरूजूथ की तरह अनुपमजूथ के अंदर और चार कहानियों का समावेश होता है। 'पहली कहानी 'डमरू' एक पारिवारिक कहानी है जिसमें नायिका तिलोत्तमा अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं को दबाकर अपने परिवार के लिये अपना पूरा यौवन किस प्रकार गँवा देती है इसका चित्रण किया गया है। पिता के अवसान के बाद परिवार का सारा बोझ उसके ऊपर आ जाता है।[5] दूसरी कहानी 'वरसादना दिवसो गया' में एक संकुल पात्र श्यामली अपने मनोजगत में डूबी रहती है। लेखिका बनने के लिये उसे लगता है कि अविवाहित रहना चाहिये, तभी विश्व प्रसिद्धि प्राप्त की जा सकती है।

पारिवारिक और सामाजिक बंधनों से मुक्ति को जिंदगी का चरम बिंदु समझा जाता है। लेकिन लेखक ने कहानियों में चित्रित समस्याओं द्वारा भारतीय द्रष्टिकोण को स्थापित करने की कोशिश की है। मधुराय नाटककार, उपन्यासकार के साथ-साथ अच्छे कहानीकार भी हैं। इन्होंने कई उपन्यासों, नाटकों तथा अनुवादों के साथ-साथ कई कहानी संग्रह भी गुजराती साहित्य को दिए हैं। जिनमें 'बांशी नाम की छोकरी' (1964), रूपकथा (1975), कालसर्प (1972) आदि संग्रह प्रमुख हैं। 'लोकसत्ता - जनसत्ता' (गुजराती दैनिक) में विशिष्ट आवृत्ति में मधुराय का 'कल्पवृक्ष' नामक उपन्यास किश्त दर किश्त छपता रहा है।

गुलाबदास ब्रोकर

इनका जन्म 27 सितम्बर, 1909 में सौराष्ट्र के पोरबंदर शहर में हुआ। उनकी शिक्षा पोरबंदर तथा बम्बई में हुई। उन्होंने बी.ए. की डिग्री एल्फीन्सटन कॉलेज, बम्बई से प्राप्त की। गाँधीजी के असहकार आन्दोलन में शामिल हुए और सोलह महिनों तक कारावास में रहे।[6]

गुलाबदासजी 'साहित्य अकादमी' के एक्जीक्यूटिव बाई के.पी.ई.एन. कमेटी के सदस्य थे। 1943 में गुजराती साहित्य परिषद की ओर से वर्ष की सबसे श्रेष्ठ कहानी पर स्वर्ण पदक प्राप्त किया। 1947 से 54 के दौरान लिखे गये नाटकों पर सर्वश्रेष्ठ नाटककार के रूप में बम्बई सरकार की ओर से प्रथम नकद पुरस्कार

मिला। 'जन्मभूमि' प्रायोजित कहानी पर भी उन्हें नकद पुरस्कार प्राप्त हुआ था। 1963 में एक कहानी संग्रह पर गुजरात सरकार की ओर से यात्रा साहित्य पर प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। गुलाबदासजी को कुमार पदक तथा अन्य पुरस्कार भी प्राप्त हुए। 1994 में मराठी साहित्य सम्मेलन और 1983 में विश्व हिन्दी सम्मेलन में उनका सम्मान किया गया। अभी आठ साल पहले भारतीय लेखक के रूप में उनका सम्मान किया गया।[7]

1938 में 'लता अने बीजी वातो' नामक वार्ता-संग्रह प्रो. रामनारायण पाठक के हाथों प्रकट किया था तब से गुलाबदास ब्रोकर का गुजराती साहित्य के क्षेत्र में प्रथम प्रवेश हुआ था। गुलाबदासजी को मित्रों के साथ बातें करने का अत्यधिक शौक था और वे साहित्य की वर्तमान समस्याओं पर चर्चा करना ज्यादा पसंद करते थे। गुलाबदासजी ने परिवार सम्बन्धी कई कहानियाँ लिखी है। उनके 'ब्रोकर नी श्रेष्ठ वार्ताओ' - कहानी संग्रह में से 'माँ अने दीकरी' कहानी के पहले चरण में माणेक तथा 'बा' के बीच का तनाव, वही सास-बहू वाली कलह, बाद में माँ और पुत्री के बीच तनाव के पश्चात पुत्री का घर छोड़कर गुरूकुल में रहना। परिवार के एक सदस्य का हमेशा के लिए विघटित होना कहानी का मूल कथ्य है। उनकी दूसरी कहानी 'गुलामदीन गाडीवाळो' कहानी में भी परिवार में पति-पत्नी के बीच का तनाव दर्शाया गया है। गुलाबदासजी का विवाह 1927 में श्रीमती 'सुमनबहेन' के साथ हुआ था। इसलिये गृहस्थाश्रम में होनेवाले प्रश्नों को भी उन्होंने अच्छी तरह अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया है।

गुलाबदासजी बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार थे। गुजराती साहित्य में उन्होंने मूर्धन्य स्थान प्राप्त किया है। गुजराती साहित्य में वे प्रथम श्रेणी के कहानीकार के रूप में सुप्रतिष्ठित हैं।

उनके बहुचर्चित कहानी संग्रह निम्नानुसार हैं :-

	रचना	सन्
(१)	लता अने बीजी वातो	1938
(२)	उभी वाटे	1944
(३)	सूर्या	1950
(४)	प्रकाशनुं स्मित	1956
(५)	जीवननां अमृत	1967
(६)	पूण्य परवार्युं नथी	1954 (सत्यकथा पर आधारित)
(७)	हरिनो मारग	1956 (सत्यकथा पर आधारित)
(८)	वसुंधरा	1940
(९)	ब्रोकरनी श्रेष्ठ वार्ताओ	1957
(१०)	माणसनां मन	1962
(११)	प्रेम पदारथ	1974
(१२)	फूल भरे गुलमहोर	1982

गुलाबदासजी की अन्य रचनायें : रूप, फूल और गुलमोहर, ब्रोकरनी समग्र

नवलिका।

उनके प्रसिद्ध नाटक : धूम्रसेन (ध. महेता के साथ)

मननां भूत, ज्वलंत अग्नि, ब्रोकरनां प्रतिनिधि एकांकीओ, ज्योति पंथे

कविता :वसंत जीवन चरित्र : नर्मद

इतिहास : गुजराती साहित्य एक विहंगावलोकन

अनुवाद - रूपांतर :	बिचारा सुनंदाबहेन	(कहानी)
	भूतावळ	(नाटक)
	विच्छेद	(नवलकथा)
	कथाभारती	(हिन्दी कहानियाँ)
	पर भोमनां पुष्पो	(कहानियाँ)

संपादन :

- आपणी श्रेष्ठ नवलिकाओ गुजरातीना एकांकी
- गुजरातीना साहित्यसर्जको मां झवेरी नी काव्यसुष्मा (अन्य साथे)
- वाङ्मयविहार (अन्य साथे) गुजराती मां गद्य
- स्वरूप अने विकास (अन्य साथे)
- ब.क.ठा. नी काव्यकृति (अन्य साथे)
- साहित्य अने प्रगति भाग-२

हिन्दी - एक परछाई दो दायरे, लता अन्यों के साथ

मराठी - जीवंन सरिता

मलयालम - लता

सिंधी में - गुजराती एकांकी, लता, श्री ब्रोकरनी श्रेष्ठ वार्ताओ

कन्नड - वार्ता संग्रह

अंग्रेजी - Of Life and Love Narmadashankar (संक्षिप्त चरित्र)

Narmadashankar (जीवन अने कवत)

श्री गुलाबदास ब्रोकर की श्रेष्ठ कहानियों में 'गुलाबदीन गाडीवाळो', 'नीलीनुं भूत' ने अत्यधिक प्रसिद्धि प्राप्त की है। साथ ही साथ 'धूम्रसेर', 'सुरभि', 'बा', 'मा अने दिकरी', 'मानो जीव', 'किरीट अने कागडो', 'प्रेम पदारथ' आदि उनकी श्रेष्ठ वार्ताएँ मानी गई हैं।

इनकी प्रसिद्ध रचनाओं का भारत की प्रायः सभी भाषाओं में तथा विदेश की अंग्रेजी, स्वीस, जर्मन, फ्रेन्च, हंगेरीयन तथा अन्य भाषाओं में रूपांतरण एवं भाषांतरण हुआ है। हिन्दी में उनकी पाँच पुस्तकें छप चुकी हैं। उन पर यह आरोप है कि वे ज्यादातर स्त्री-पुरूष सम्बन्धों की कहानियाँ लिखते हैं। लेकिन उनकी कहानियों पर नजर डालने पर पता चलता है कि उनमें स्त्री-पुरूष सम्बन्धों की कहानियों की अपेक्षा माता और बालक के सम्बन्धों की कहानियाँ अधिक मिलती हैं। यहाँ तक कि माताओं के विषय में उनके बराबर संभवतः अन्य किसी लेखक ने कहानियाँ नहीं लिखी होंगी। माँ पर लिखी गई उनकी दो चुनी हुई कहानियों का हिन्दी अनुवाद गोपालदास नागर ने अपनी 'माँ' नामक पुस्तक में प्रकाशित

किया।"[8]

गुलाबदासजी की कहानियाँ विशेषकर महानगरों के सुशिक्षित मध्यमवर्गीय परिवार एवं परिवेश की वास्तविक स्थितियों का चित्रण प्रस्तुत करती हैं।

जयंति दलाल :

जयंति दलाल का जन्म 18 नवम्बर, 1909 में हुआ था। पिता श्री घेलाभाई देशी नाटक समाज कम्पनी के मैनेजर थे। नाटक कंपनी की वजह से उनका प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षण अलग-अलग स्थानों पर हुआ।[9] उनकी साहित्य प्रेरणा नाटक रही है। साहित्य प्रवृत्ति में उनका प्रवेश 1941 में 'जवनिका' के प्रकट होने पर हुआ। नाटक में पहले से रुचि होने के कारण उन्होंने कई नाटकों में स्वयं अभिनय भी किया और नाट्य विवेचन भी किया। 'काया लाकडानी', 'माया लुगडांनी' उनकी नाट्यरचनाएँ हैं। जयंति दलाल 'गति अने रेखा' नामक मासिक में 1938 में काम करते थे। कई सालों बाद टोल्स्टोय की महान रचना 'वॉर एण्ड पीस' का गुजराती में अनुवाद किया। उन्होंने लगभग 42 अनुवाद किये हैं। वे गुजराती साहित्य के प्रतिभाशाली अनुवादक भी रह चुके हैं। उन्होंने कई नाटकों में भी काम किया था, जैसे 'बिखरे मोती', 'विणावेली' में मुख्य भूमिका की थी। गुजरात के सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में उनका बहुत बडा योगदान रहा है। महागुजरात के चर्चित संघर्ष में उन्होंने सक्रिय भाग लिया और साथ-साथ

'महागुजरात जनता परिषद' के मुख्यमंत्री भी बने थे। जयंति दलाल एक कुशल व्यवस्थापक थे और उस विषय पर अच्छी जानकारी रखते थे। 'हकीकत' नामक पुस्तक उन्होंने सिर्फ दो दिन में लिखी थी। वे 'छोटा नाटक' यानि कि एकांकी और छोटी कहानी यानि कि 'नवलिका' जैसे लावण्यपूर्ण साहित्य में भी माहिर थे।

श्री दलाल कहानियों में नगर जीवन का वास्तविक दर्शन करानेवाले एक प्रसिद्ध कहानीकार थे। बम्बई के जितुभाई महेता, लकुलेश, कच्छ सौराष्ट्र के जयंत खत्री के समान उनका स्थान भी महत्वपूर्ण था। जयंति दलाल ने साहित्य सृजन का शुभारंभ 1950 के पहले से किया और 1970 तक अविराम लिखते रहे। जयंति दलाल को 'प्रयोगवीर' के नाम से भी पहचाना जाता है। उन्होंने कई चुटकुले, रिपोर्ताज कवित्वपूर्ण कहानियों के साथ पशुकथा, पुराण कथा, लोक कथा, इतिहास कथा आदि पर भी अपनी लेखनी आजमाई। जयंति दलाल जी डायाबिटीस जैसे महा रोग का निदान होमियोपथी से करते रहे । रोग बढ़ने के कारण 1970 में उनका निधन हुआ। उनके प्रसिद्ध संग्रहों में 'उतरा' (1954), 'जूजवा' (1950), आ घेर पेले घेर (1956), 'अडखे-पडखे' (1964), युधिष्ठिर (1968), 'कथरोट मां गॅग' (1950), 'मूकं करोति' (1953), 'मारी शेरी ने नाके', 'ईषत' (1963), जयंति दलाल की प्रतिनिधि कहानियॉ (1971) आदि प्रमुख हैं।

चुन्नीलाल मडिया :

चुन्नीलाल मडिया का जन्म सौराष्ट्र के धोराजी गाँव में 12 अगस्त, 1922 को हुआ था। उनके पिता का नाम कालिदास भदवजी और माता का कसुंबा था। वे श्रीमाळी जैन वणिक थे। आपने भगतसिंहजी स्कूल में अपनी शिक्षा पूरी करके उच्च शिक्षा के लिये अहमदाबाद के हरगोवनदास लक्ष्मीचंद कॉलेज ऑफ कॉमर्स में प्रवेश लिया। मडिया जी को साहित्यिक प्रवृत्ति में रूचि थी इस वजह से ही उन्होंने विद्यार्थी काल से ही पत्रकारत्व को पसंद किया था। इसलिये मुंबई जैसे महँगे शहर में उनका मुख्य आधार पत्रकारत्व ही था। अहमदाबाद में रहकर उन्होंने 'प्रभात' और 'नवसौराष्ट्र' में पत्रकार के रूप में काम किया था तथा मुंबई में 'जन्मभूमि' में तंत्रीमंडल का स्थान प्राप्त कर सके थे। बाद में मडियाजी को मुंबई की 'युनाइटेड स्टेट्स ऑफ इन्फर्मेशन सर्विस' में गुजराती संस्था में कार्य करने का अवसर मिला। वर्ष 1963 में उन्होंने अपना 'रूचि' नामक सौंदर्यलक्षी सामयिक (मासिकपत्र) प्रारम्भ किया था।

कॉलेज की इण्टरमीडिएट परीक्षा में फेल होने के बाद छुट्टियों में मौज की खातिर पन्द्रह एक कहानियाँ लिख डाली थीं। बहुत-सी कहानियाँ उन्हें तैयार मिल गईं यानि कि सुनी हुई, जानी हुई, अनुभव की हुई। मड़ियाजी ने तेरह नवलकथाएँ, ग्याहर नवलिका संग्रहों, नाटक की छः पुस्तकें, चार विवेचनग्रंथ, एक कविता संग्रह; दो जीवन चरित्र, परिचय पुस्तिकाएँ और प्रवासवर्णन के साथ कुल इकतालिस मौलिक ग्रंथों के रूप में साहित्य की रचना की। आपने गुजराती साहित्य में प्रथम

कहानी संग्रह 'घूघवता पूर' 1945 के साथ प्रारंभ किया। तब से लेकर 1968 तक लगातार लिखते रहे।

चुन्नीलाल मडिया ने लिखा है - "टूंकी वार्तानो साचो आस्वाद माणवा माटे वाचकोअे पण पात्रना स्वाद परथी समय पारखनारी पेली मध्ययुगी वारांगनाओ जेटली ज परखशक्ति केळववी रही, नागरवेलना पाननी जेम वार्ता रसनुं 'पान' पण अधिकारी भोक्तानी अपेक्षा राखे छे. टूंकी वार्ता वाचकनुं संवेदन तंत्र पण अे वार्तांना सर्जकना जेटलुं ज सुक्ष्म होवुं आवश्यक छे...."[10]

मडियाजी ने कहानी लिखते समय केवल काल्पनिक किस्सों से प्रेरित होकर कई कहानियाँ लिखीं। 'घूघवतां पूर' (1945) से प्रवेश किया तबसे वे लिखते आये हैं -

"साची वात तो अे छे के नियमो वडे वार्ता लखाती नथी पण वार्ताओमांथी नियमो उभा थाय छे।"[11]

उनके प्रसिद्ध ग्रंथ 'यक्षजा' (1947), 'चंपो के केळ' (1950), 'तेज अने तीमिर' (1952), 'रूप-अरूप' (1953), 'शरणाईना सूर' (1954), 'अंतःस्त्रोत' (1956), 'जेकब सर्कल सात रस्ता' (1951), 'क्षणार्थ' (1962), 'क्षत-विक्षत' (1968) आदि।

29 दिसंबर, 1968 को मुंबई जाने के लिये अहमदाबाद से निकली हुई रेल्वे गुजरात मेल मणिनगर स्टेशन पहुँचे उससे पहले ही चालु ट्रेन में 9:38 को उनका जीवनदीप बूझ गया था।

ईश्वर पेटलीकर :

पेटलीकर का पूरा नाम ईश्वरभाई मोतीभाई पटेल है। इनका जन्म 9 मई 1916 को पेटलाद तालुका के पेटली गाँव में हुआ था। प्राथमिक शिक्षा पेटली और मलातज में हुई। 1935 में उन्होंने मेट्रिक की परीक्षा सोजीत्रा की हाईस्कूल से पास की। वडोदरा की पुरूष अध्यापन पाठशाला में 1938 में शिक्षक की दीक्षा लेकर वे वरिष्ठ शिक्षक बने। 1944 में आणंद की आर्य समाज संस्था के मुखपत्र 'आर्य प्रकाश' में कार्य करना प्रारम्भ किया। 1950 के आसपास 'गुजरात समाचार' और 'संदेश' दैनिक में प्रवर्तमान जीवन की विविध घटनाओं के विवेचन-विश्लेषण से संबंधित स्तम्भ कई वर्षो तक लिखते रहे। 1965 में रणजितराम सुवर्णचन्द्रक से उनको सम्मानित किया गया।[12]

कहानीकार बनने के बारे में कभी सोचा भी नहीं था मगर हाईस्कूल में रमणलाल देसाई की नवलकथा 'ग्रामलक्ष्मी' पढ़ने के बाद मन में हुआ कि वह खुद भी कहानी लिख सकते हैं और मासिक पत्रिकाओं में कहानी लिखने की शुरूआत 'टूंकी वार्ता' के जरिये की। उन्होंने साहित्य प्रवेश 'प्रजाबंधु' और 'जनमटीप'

नवलकथा के द्वारा किया, जब वह हप्तावार छपने लगी तब मेघाणीजीने उसको स्वीकार कर उनका गुजराती टूंकी वार्ताओं में समावेश किया।

उनके अब तक प्रकाशित संग्रह :

टूंकी वार्ता संग्रह : 'जनमटीप' (1944), 'लख्यां लेख' (1945), 'धरतीनो अवतार', 'काजळ कोटड़ी' (1949), 'मारी हैया सगडी' (1950), 'मधलाळ' (1950), 'भवसागर' (1951), 'आशापंखी' (1953), 'तरणा ओथे डुंगर' (1954), 'कल्पवृक्ष' (1956), 'शकुंतला' (1957), 'प्रेमपंथ' (1959), 'युगना अेंधाण' (1961), 'ऋणानुबंध' (1963), 'जय पराजय' (1963), 'लाक्षागृह' (1965), 'जूजवां रूप' (1967), 'सेतुबंध' (1969), 'अथिभात' (1971) आदि।[13]

नवलिका संग्रह : 'ताणावाणा' (1946), 'पटलाईना पेच' (1946), 'मानता' (1947), 'पारसमणि' (1959), 'काशीनुं करवत' (1949), 'चिनगारी' (1950), 'लोहीनी सगाई' (1952), 'अभिसारिका' (1954), 'आकाशगंगा' (1958), 'मीन पियासी' (1960), 'कठपुतळी' (1962)

रेखाचित्र : ग्रामचित्रो (1944), धूपसळी (1953), गोमतीघाट (1961)

निबंध-संग्रह : जीवनदीप (1953), लोकसागरने तीरे तीरे (1954), महागुजरातनां नीरक्षीर (1956), संसार नां वमळ (1947), जीवन संगम (1960), सुदर्शन (1960).

पेटलीकर 'पाटीदार' मासिक के तंत्री बनने के पश्चात् समग्र हिन्दू समाज के ज्वलंत प्रश्नों की चर्चा करते थे। उसके साथ स्त्री-पुरूष सम्बन्ध, लग्न जीवन, कुटुंब जीवन, व्यक्ति और समाज आदि की परिस्थिति का परिस्थितिगत बौद्धिक विश्लेषण करके पेटलीकरजी ने कहानियाँ लिखीं। पेटलीकर का ज्यादातर ध्यान सामाजिक वास्तविकता को प्रगट करने में था। इसलिये धीरूभाई ठाकर ने कहा है - 'पेटलीकर समकालीन समाज के वास्तविक जीवन की वस्तु के वार्तारूप विश्लेषण को केन्द्र में रखकर रहकर समस्या का निराकरण, एक डॉक्टर जिस प्रकार रोग का निदान करता है, उसी तरह करते थे।[14] पेटलीकर की नवलकथाओं के पात्र परिस्थिति की बौद्धिक प्रक्रिया में से होकर सामाजिक वास्तविकता के अनुसार रहे हैं।

टूंकी वार्ता के निरूपण में उन्हें विशेष सफलता हासिल हुई है। पेटलीकर जी छठे दशक से पहले पारिवारिक विघटन की कई कहानियाँ लिख चुके हैं। 'पेटलीकरनी श्रेष्ठ वार्ताओ' में 'मोटी बहेन' कहानी भाई-बहन के बीच का संघर्ष, परिवार की तनावजन्य परिस्थिति को प्रस्तुत करती है। इसी तरह उनकी कहानी 'काशीनुं करवत', 'अकळ लीला', 'दुःखना पोटला' में पारिवारिक विघटन के साथ-साथ तनाव, संघर्ष प्रस्तुत किया है।

ईश्वर पेटलीकर साठोत्तरी कहानीकार नहीं हैं। मगर साठ से पहले उन्होंने इस विषय पर काफी कुछ लिखकर गुजराती साहित्य को दिया है। जब पारिवारिक,

स्त्री-पुरुष सम्बन्धी, व्यक्ति और समाज से जुड़ी कई बातें आती हैं, तब पेटलीकरजी को याद करना आवश्यक हो जाता है। पेटलीकर की सुप्रसिद्ध कौटुंबिक-सांसारिक समाज जीवन से संबंधित कहानियाँ हैं - नवदंपत्ति, संस्कारी कामनाओं, संसारना वमळ, सुदर्शन, प्रसन्न दाम्पत्य, मंगल कामना और संस्कारधन आदि।

कुन्दनिका कापड़िया :

कुन्दनिका कापड़िया का जन्म 17 जनवरी 1927 के दिन सौराष्ट्र के लीमड़ी गाँव में हुआ। गोधरा में प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करके आप कुछ समय के लिये बडौदा आईं। बी.ए. की शिक्षा भावनगर में तथा एम.ए. की शिक्षा मुंबई 'स्कूल ऑफ पोलिटिक्स' से प्राप्त की।

'नारी जीवन के सर्वसंग्रह' का विशेषण प्राप्त उपन्यास 'सात पगलां आकाशमां' के लिये साहित्य अकादमी दिल्ली ज्ञानपीठ अवॉर्ड भी कुन्दनिकाजी को प्राप्त हुआ। 'यांत्रिक' सामयिक का संपादन भी दो साल तक किया। अहमदाबाद में 'अखंड आनंद' मासिक और बम्बई से प्रकाशित होनेवाले अखबार 'जन्मभूमि' में वे नियमित रूप से लिखती रही हैं। 1962 से उन्होंने नवनीत का संपादन कार्य शुरू किया और 20 साल तक उस कार्य को निभाया।

'प्रेमना आँसू' छोटी कहानी उनकी पहली रचना है। 'जन्मभूमि' द्वारा आयोजित छोटी कहानी की विश्वस्पर्धा में इस कहानी को द्वितीय इनाम प्राप्त हुआ। तब से उन्होंने लिखने का प्रारंभ किया और बाद में अनेक कहानियाँ लिखीं। कुन्दनिकाजी की ज्यादातर रूचि छोटी कहानियों में ही है। अपनी अधिकतर कहानियों में वह मानवीय संवेदना, परिवार से जुडे मानवीय प्रश्न, ग्रामजीवन के साथ शहरी जीवन के पुरूष-स्त्रियाँ और बच्चे होते हैं, उनकी भावना हूबहू पहचानकर और उसे महसूस कर उन्हें प्रस्तुत करती हैं। जीवन के उजले तथा म्लान दोनों रूपों को उन्होंने कहानियों में स्थान दिया है। कुन्दनिकाजी की लिखने के अलावा संगीत और फिलॉसॉफी में भी रूचि रही है। उनको लिखने की प्रेरणा खास कर सामाजिक जीवन, धूमकेतु, टैगोर तथा पश्चिमी सर्जकों में शेक्सपियर तथा इब्सन से प्राप्त हुई। लिखने में रूचि विकसित होने के बाद साहित्य द्वारा कुछ करने की प्रेरणा प्रबल होती गई। इसी प्रेरणा के प्रबल होते ही उन्होंने तीन सुंदर कहानी संग्रह दिये हैं।

उनका पहला कहानी संग्रह 'प्रेमना आँसू' 1954 में प्रकाशित हुआ। उसके बाद 1968 में 'वधु ने वधु सुंदर' तथा 1978 में 'कागळनी होडी' प्रकाशित हुई।

शिवकुमार जोशी :

बचपन से जवानी तक अहमदाबाद में रहे। संस्कृत के साथ बी.ए. बम्बई विश्वविद्यालय से करने के बाद वे कलकत्ता चले गये। कलकत्ते में उनका कपडों

का व्यापार है और उनका निवास स्थान भी कलकत्ता में ही है।

अभिनय और नाटक लिखने में अधिकतर उनकी रूचि रही है। वे मूलतः नाटक्कार हैं। शिवकुमारजी ने 'पाँख विनाना पारेवां' नामक एकांकी के साथ ही साहित्य प्रवेश किया था। शिवकुमारजी ने 12 (एक दर्जन) कहानी संग्रह दिये हैं, साथ-साथ एक प्रवासकथा 'जोवी'ती कोतरे ने जोवी'ती कंदरा' और नाटक जगत को 'मारग आ पण छे शूरानो' पुस्तक का उपहार दिया है। शरदबाबु कृत 'बिराजवहु' और 'देवदास' को नाटक में रूपान्तरित किया है। साथ-साथ उन्होंने रवीन्द्रनाथ कृत 'जोगाजोग', विभूतिभूषण का 'आदर्श हिन्दू होटल' और विजन भट्टाचार्य कृत 'नबान्न' का बंगाली में अनुवाद किया है। शिवकुमारजी की गणना गुजराती साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कहानीकार और उपन्यासकार के रूप में भी होती है।"[15] गुजराती साहित्य क्षेत्र में विशिष्ट सेवा प्रदान करनेवाले जिन लेखकों को रणजीतराम स्वर्ण पदक और नर्मद स्वर्ण पदक देकर सम्मानित किया गया उनमें आप भी समुल्लेखनीय हैं। इसके साथ अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत, बंगाली आदि साहित्य के अध्येता एवं समर्थ आलोचक के रूप में उनकी कीर्ति सारे भारत में फैली हुई है।

शिवकुमारजी की अधिकतर कहानियों में प्रायः महानगरीय परिवेश में जीवन बसर करनेवाले लोगों का चित्र अंकित है। शिवकुंमारजी अपनी कहानियों में मनुष्य का चित्रण करते हुए कहते हैं कि- "मैंने अपनी कहानियों में इंसान को समझने

तथा उसका चित्रांकन करने का प्रयत्न किया है। वैसा करते समय मुझे अपने व्यक्तिगत परिणाम विस्तरित, संकुचित या लुप्त होते अनुभव हुए। कहानी की बुनावट में इंसान को नापने की उनकी शक्ति तथा मन का अनुभव होता रहा है। चेहरे पर रेखा, मुद्रा अभिनय, आकृति, छटा ये सब उनके लिये चिरपरिचित हैं। उनके साथ हर किसी को हाथ मिलाने की इच्छा होती और उसमें से कहानी, नाटक का सर्जन होता।"[16]

(II) साठोत्तरी हिन्दी लेखकों के हस्ताक्षर :

कमलेश्वर :

कमलेश्वर जी का जन्म 6 जनवरी, 1932 में उत्तरप्रदेश में मैनपुरी में हुआ।[1] इन्होंने एम.ए. की शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय से ग्रहण की। उनकी पहली कहानी 'कामरेड़' एटा से निकलनेवाली 'अप्सरा' पत्रिका में छपी थी। कमलेश्वर मार्मिक चरित्रों का निर्माण करनेवाले शिल्पी हैं। एक रचनाकार के नाते कमलेश्वर ने कहानी को नई दिशा प्रदान की है। स्वयं कमलेश्वर जी के शब्दों में - "पश्चिम की कुंठा, कुत्सा, अकेलापन, पराजय और हताशा चिन्ता का विषय हो सकता है, वर्ज्य नहीं। क्योंकि हमारी कुंठा, अकेलापन और अस्तित्व का संकट उससे नितांत भिन्न है - यह टूटते परिवार से उद्भूत है, वह आर्थिक सम्बन्धों के उबाव से अनुस्यूत है।"[17]

इनकी कहानियों का मूल स्वर कस्बाई है। कस्बे से आया एक व्यकित महानगर में भटकाव और अकेलापन महसूस करता है। 'खोई हुई दिशायें' संबंधों के टूटने की और महानगरों में व्यक्ति की अजनबियत और खोखली संस्कृति की ऐसी ही कहानी है। कमलेश्वर की साठ से पूर्व की सर्वाधिक प्रसिद्ध और चर्चित कहानी 'राजा निरबंसिया' है। कहानी का मूल स्वर दाम्पत्य-सम्बन्धों में तनाव और दरार का कारण आर्थिक विवशता है। पति-पत्नी कुछ भी सहने या करने को लाचार हो जाते हैं। अपनी कहानियों द्वारा उन्होंने नये मूल्यों की तलाश भी की है। 'तलाश' में एक युवा विधवा का द्वन्द्व चित्रित है, जो एक ओर नारी है, तो दूसरी ओर माँ। नारी की अपनी भावनायें हैं, जो मरी नहीं हैं, माँ के नाते युवा होती पुत्री के प्रति भी उसका कर्तव्य है। कमलेश्वर ने हर रंग की कहानी लिखी है। परम्परा, परिवेश, परिवर्तन सन्दर्भ, यथार्थ, शिल्प सभी के प्रति वे सजग रहे हैं। आम आदमी के दुःख, दर्द, उसकी आशाओं-आकांक्षाओं को पकड़ा भी है और समझा भी है, रूढ़ियों का त्याग नवीनता के प्रति आकुलता, नये मूल्यों की तलाश के बाद उनकी स्थापना का प्रयास है।

कमलेश्वर का प्रथम कहानी संग्रह 'राजा निरबंसिया' था। उसके बाद कई संग्रह प्रकाशित हुए जैसे कि 'कस्बे का आदमी' (1966), 'खोई हुई दिशायें' (1963), 'माँस का दरिया' (1963-64), 'बयान' (1972), 'जिन्दा मुर्दे' (1961), 'मेरी प्रिय कहानियाँ' (1972) आदि। मैनपुरी-इलाहाबाद से लेकर दिल्ली और बाद में बम्बई तक की यात्रा उन्होंने तय की है। इनकी प्रमुख कहानियों में आज

के अजनबीपन, देश रक्षा के लिए उत्पन्न जुनून, कर्ज अदायगी, आज की परिस्थितियों पर करारा व्यंग्य, मन के कोनों में समाये प्रेम की अभिव्यक्ति, आज की जिन्दगी के आये ठहराव, भूख, बेकारी और बीमारी आदि परिस्थितियों से गुजरती आठवें दशक की कहानी इन्हीं की देन है। स्वयं कमलेश्वर के शब्दों में - "सामान्य मनुष्य की जिंदगी, उस जिंदगी की विसंगतियाँ और समस्याएँ उन्होंने चित्रित की हैं। जीवन की सच्चाईयों के प्रति लिये गये निर्णयों की भी कहानियाँ हैं।"

कमलेश्वर ने 'नई कहानी की भूमिका' में स्वतंत्रता के पश्चात् के समाज का चित्रण करते हुए लिखा है - "चारों तरफ चाटुकारिता, भाई-भतीजावाद, रिश्वतखोरी, काला बाज़ार, विसंगति और भीड़ है, जिसमें उसका अपना अस्तित्व नगण्य हो गया है और उसकी मुद्रा है कि कुछ भी करने से कुछ भी नहीं हो सकता।"[18]

उषा प्रियंवदा :

उषा प्रियंवदा ने इलाहाबाद विश्व विद्यालय से एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। कुछ समय के लिये वहीं अंग्रेजी में प्रध्यापन किया, फिर संयुक्त राज्य अमेरिका के इण्डियाना विश्व विद्यालय में आधुनिक अमरिकी साहित्य पर अनुसंधान कार्य किया। उषा प्रियंवदा ने परम्पराओं, रूढ़ियों और जड़ मान्यताओं का विरोध किया है। अनेक मनःस्थितियाँ - एकरसता, ऊब, अकेलापन, घुटन, उदासी भी उनकी कहानियों में चित्रित हुई हैं। आलोचक उनकी कहानियों का परिवेश अभारतीय

कहते हैं। यह अवश्य है कि वातावरण विदेशी है, परन्तु पात्र भारतीय संस्कारों से युक्त है।

उन्होंने परिवार से जुड़ी ,परिवार के सदस्य और परिवार से जुड़ी हर समस्या पर कहानियाँ लिखी हैं। 'वापसी' इनकी बहुचर्चित कहानी है जो बदलते पारिवारिक सम्बन्धों को सहज और सशक्त रूप से व्यक्त करती है। गजाधर बाबू रिटायर होकर आते हैं, तो पत्नी और संतान के लिये अजनबी बन चुके होते हैं। उनका स्थान केवल घर में रखी चारपाई से ज्यादा नहीं है। वे धनोपार्जन के निमित्त मात्र रह गये हैं। अंत में निराश होकर वापस चले जाते हैं। 'जिन्दगी और गुलाब के फूल' की विवशता और विकलता 'वापसी' के अकेलेपन से अधिक मर्मस्पर्शी है। 'सम्बन्ध' की नायिका किसी से भी 'कमिटेड' होकर जाना नहीं चाहती है। सभी कहानियों का यथार्थ प्रामाणिक है।

आधुनिक मध्यमवर्गीय परिवार का जीवन, परिवर्तित मान्यताएँ, मूल्य और मर्यादा उनकी कहानियों का कथ्य है। नारी नये मूल्यों को आत्मसात करने का प्रयास कर रही है। पति-पत्नी के सम्बन्धों की आधुनिक परिवर्तित संदर्भों में व्याख्या की है। वर्जित सत्यों को भी सहजता से प्रस्तुत किया है। मानवीय सम्बन्धों में स्त्री-पुरूष सम्बन्धों को विशेषरूप से लिया गया है। इसीलिए कहानी में शिल्प और कलात्मकता से अधिक महत्व उन्होंने सत्य के चित्रण को दिया है। उनकी कहानियाँ व्यक्ति, उसके पारिवारिक जीवन के उन क्षणों को उभारती हैं,

जहाँ वह अन्दर ही अन्दर घुट रहा हो। नई मान्यताओं और मूल्यों को स्थापित करना उनकी तड़प है। 'वापसी', 'खुले हुये दरवाजे' उनकी उपलब्धियाँ हैं।

भारतीय और विदेशी परिवेश में लिखी हुई कहानियों का तथ्य गहराई में ढँकी भारतीयता ही है। इनके प्रकाशित कहानी संग्रह 'बडा झूठ', 'जिन्दगी और गुलाब के फूल', 'फिर बसन्त', 'आया', 'एक कोई दूसरा', 'मेरी प्रिय कहानियाँ' आदि हैं।

मन्नू भंडारी :

श्रीमती मन्नू भंडारी का जन्म अप्रैल 1931 में भागपुरा (राजस्थान) में हुआ। उन्होंने ने एम.ए. की शिक्षा प्राप्त की है। उन्होंने मिरांडा हाउस, दिल्ली विश्व विद्यालय में काफी समय प्राध्यापन का कार्य किया। मन्नू भंडारी की कहानियाँ जीवन से अधिक निकट हैं। उनमें व्यक्ति की पहचान, सामाजिकता को नजर अंदाज नहीं किया गया है। पारिवारिक सम्बन्धों का सही चित्रण हुआ है। आधुनिक प्रेम-प्रसंगों के संदर्भ मिलते हैं। नारी मन की क्षमता और दुर्बलता का चित्रण इनकी कहानियों का मुख्य प्रतिपाद्य रहा है। नारी का चित्रण प्रस्तुत करना ही इनका ध्येय रहा है। आज की नारी परिवर्तित सामाजिक एव पारिवारिक सन्दर्भों में जकड़ी हुई है।

इनकी कहानियों के कलात्मक कथ्य और सहजता ने कहानियों को लोकप्रिय बनाया है। उनकी कहानियों में व्यक्ति की कुंठा, घुटन, पराजय तथा विवशता अधिक उभर आयी है किन्तु साथ ही परिवेश से जुड़ी सामाजिक समस्याओं का चित्रण भी है। एक महिला कथाकार होने के नाते उन्होंने नारी के मनोविज्ञान को बहुत बारीकी से चित्रित किया। नई पीढ़ी के लेखकों में उनका प्रमुख स्थान है।

मन्नू भंडारी ने जीवन की जटिल और गहरी सच्चाईयों का सामना करने की चेष्टा की है। उनकी कहानियों में व्यक्ति की कुंठा, घुटन, पराजय तथा विवशता अधिक उभर आयी है, किन्तु साथ ही परिवेश से जुड़ी सामाजिक समस्याओं का चित्रण भी है। उनकी समस्या शारीरिक और मानसिक रूप से पुरूष निर्भरता से मुक्ति है। अपनी 'स्त्री सुबोधिनी' कहानी द्वारा वे उन नादान और अन्जान लोगों को सन्देश देतीं हैं - प्रेम का बीज मन और शरीर की पवित्र भूमि में नहीं, घर-परिवार के लोगों के सम्बन्धों से पलता है।"[19]

आज आधुनिक परिवार पर अनेक प्रकार के दबाव हैं। उनमें मुख्य हैं आर्थिक संकट। इनका सामना करने के लिये परिवार का मोह त्यागकर नारी बाहर निकलती है, नौकरी करती है और इस संघर्ष में लीन रहकर अपने परिवार और खुद को टूटने से बचाती है। आज परिवार यदि उसे परिवार कहा जा सके तो पति-पत्नी और बच्चे तक सीमित रह गया है। मन्नू भंडारी ने शिक्षित युवती के

वैवाहिक जीवन की आंतरिक ट्रेजड़ी को सूक्ष्म दृष्टि से पहचानकर बडी कुशलता के साथ अंकित किया है। मन्नू भंडारी ने अपने संग्रहों में ज्यादा से ज्यादा परिवार के बारे में लिखा है, परिवार में नौकरीपेशा नारी और उनसे जुडे परिवार के प्रश्नों को लेकर अधिक कहानियाँ लिखी हैं। उनके बहु चर्चित कहानी संग्रह - 'एक प्लेट सैलाब' (1968), 'मैं हार गई' (1957), 'तीन निगाहों की एक तस्वीर', 'यही सच है' (1966), 'त्रिशंकु' (1978-81) हैं।

श्रेष्ठ कहानियाँ - मेरी प्रिय कहानियाँ, प्रतिनिधि कहानियॉ, प्रतिनिधि कहानियों के नाम से भी इनकी कहानियों के विविध संकलन प्रकाशित होते रहे हैं।

मोहन राकेश :

स्वतंत्रता के बाद जिन नई स्थितियों और जीवनमूल्यों को समकालीन मनुष्य अनुभव कर रहा था, उसे मोहन राकेश ने बड़ी सहानुभूति एवम् साहस के साथ अभिव्यक्त किया है। सन् 1950 के उपरांत कहानी के क्षेत्र में जो नया मोड आया है, उसकी सबसे अच्छी पहचान मोहन राकेश के लेखन से होती है। कहानी के सम्बन्ध में कोई भी चर्चा उनके बिना अधूरी रह जाती है। उनकी सबसे ज्यादा कहानियाँ सामाजिक रिश्तों की कहानियाँ हैं। आपने व्यक्ति से ज्यादा परिवेश पर ध्यान दिया है और समाज के प्रति सदा वे प्रतिबद्ध रहे हैं। अपने जीवन के

उतार-चढ़ाव के कारण आपकी दृष्टि व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और सबसे ऊपर मानवता तक पहुँची है। उनके जीवन में बहुत ही उतार-चढ़ाव आये मगर ये सब सहते हुए भी वे अपने मनोबल को टिकाये रखते थे। परिवार से अलग होकर आज के व्यक्ति की गति सम्भव नहीं है।

'मन्दी', 'मलबे का मालिक', 'उसकी रोटी', 'नये बादल' कहानियाँ उनके चिन्तन को प्रभावित करते हुए भी सामाजिकता को नहीं छोड़तीं। इनकी कहानियों में सामाजिक सन्दर्भों में सजग सामाजिक चेतना, मूल्यों के प्रति निष्ठा, मानव के प्रति आस्था की क्षमता का आभास होता है। 'एक और जिन्दगी' तथा 'सुहागिनें' पारिवारिक जीवन के संदर्भो की पहचान कराती हैं। मोहन राकेश की कहानियों में शिल्प बहुत ही कठिन रहा है। यद्यपि शिल्प के प्रति उनका कोई लगाव नहीं है।

डॉ. गोरधनसिंह ने उनके शिल्प के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट करते हुए लिखा है - "अनेक विसंगतियों के बीच द्वन्द्व और तनाव झेलते स्त्री-पुरूष निरन्तर टूटते मानवीय रिश्ते, व्यक्ति का अकेलापन, ऊब, उदासी, रिक्तता को उजागर करनेवाले बिम्ब उनकी कहानियों में हैं। महानगरीय संत्रास, भयावहता के सम्मुख टूटते-समर्पित होते स्त्री-पुरूष हैं तो विभाजन व पारिवारिक विघटन का ताप-संताप झेलते व्यक्ति भी हैं।"[20]

व्यक्ति एवम् सामाजिक धरातल पर सम्बन्धों के बदलाव के प्रति वे सदा

जागृत रहे हैं। पति-पत्नी के सम्बन्धों की पीडा को ही अधिक महत्व दिया है। 'एक और जिंदगी' की भूमिका में मोहन राकेश ने लिखा है कि - "हिन्दी की नई कहानी जिस रूप में विकसित हुई है, उसी रूप में उसका भारतीय जीवन के धरातल से गहरा सम्बन्ध है। इसलिए वह केवल सॉफिस्टीकेटेड पाठक की कहानी न होकर साधारण पाठक की कहानी बनी रही है... कहानी की वर्तमान दिशा एक सामाजिक दिशा है।"[21]

उनके प्रसिद्ध कहानी संग्रह हैं -

'इंसान का खण्डहर' (1950),

'नये बादल' (1957),

'जानवर और जानवर' (1958),

'एक और जिन्दगी' (1961),

'फौलाद का आकाश' (1966),

'क्वार्टर' (1972),

'पहचान' (1972) आदि।

मोहन राकेश की सम्पूर्ण कहानियों का संपादन उनकी धर्मपत्नी अनिताजी ने किया है। उनका प्रथम संस्करण वर्ष 1984 में राजपाल एण्ड सन्स द्वारा प्रकाशित किया गया। 1985 में 'मोहन राकेश की डायरी' राजपाल एण्ड सन्स की ओर से प्रकाशित की गई। इस डायरी में उनके परिवेश, मित्रगण, प्रेमप्रसंग,

साहित्य गतिविधियाँ तथा नई कहानी आन्दोलन का विवरण प्रमाणित रूप में मिलता है।

ज्ञान रंजन :

ज्ञान रंजन व्यक्तिवादी चेतना से प्रभावित हैं। साठोत्तरी पीढी के हिन्दी कहानीकारों में ज्ञानरंजन ने अपने को महत्वपूर्ण कथा हस्ताक्षर के रूप में स्थापित किया है। विविध अनुभव के मार्मिक यथार्थ के विविध पक्षों को संवेदना के स्तर पर उद्घाटित करने वाली अप्रतिम क्षमता से सम्पन्न ज्ञानरंजन की कहानियाँ अपनी विशिष्ट पहचान बनाने में सफल हुई हैं।

उनकी अधिकतर कहानियों में मध्यम वर्गीय व्यक्ति के जीवन की आधुनिकता तथा बदलते मूल्यों पर भी गहरे संकेत किये गए हैं। इनमें समाज व्यवस्था और पारिवारिक सम्बन्धों के बदलावों का अंकन भी किया गया है।

ज्ञान रंजन का लेखन सार्थक है। उसमें 'यथार्थ की प्रामाणिकता' और 'अनुभव' है, जिसने उनके लेखन को गहराई प्रदान की है। उनकी कहानियों में आम आदमी की जिन्दगी का चित्रण, हर बार एक नये अर्थ की व्यंजना, टूटे-फूटे सम्बन्धों से मुक्ति, मनोग्रंथियों को गहराई से जानने की कोशिश करना , कहीं-कहीं अनास्था और घुटन भी में है। नयी पीढ़ी अपने व्यक्तिपरक दृष्टिकोण से

समाज और परिवार-सम्बन्धों को देखती है, इसलिये खंडित होता हुआ संयुक्त परिवार और उसकी आंतरिक व्यथा भी उनकी कहानियों में व्यक्त हुई है।

श्री उपेन्द्रनाथ अश्क ने लिखा है - "बहरहाल सहसा', 'शेष होते हुए' से ज्ञान की ओर ध्यान गया और मुझे लगा कि एकदम नये कथाकारों में इस लेखक के पास नयी दृष्टि, नयी संवेदना, नयी भाषा और नये भाव ही नहीं, उनकी अभिव्यक्ति के लिए व्यंग्य का एक ऐसा व्यक्तिगत कारण भी है, जो अन्यत्र नहीं मिलता।"[22]

'शेष होते हुए', 'फैंस के इधर-उधर', 'सम्बन्ध', 'पिता' आदि कहानियों में इनका दृष्टिकोण परम्परागत रहा है। 'घंटा', 'बहिर्गमन' उनकी दो प्रभावशाली कहानियाँ हैं। मध्यमवर्गीय जीवन की टूटती परम्पराओं, बदलते सम्बन्ध और विघटित मूल्यों की पीड़ित मानसिकता को ज्ञानरंजन ने सजीवता के साथ अपनी कहानियों में रेखांकित किया है।

साहित्य रचना में वे आत्मिक मुख मानते हैं, क्योंकि मानव-मन का दुःख और पीड़ा भी उसमें अभिव्यक्ति पा लेता है और इस प्रकार सामाजिक दायित्व का भी निर्वाह हो जाता है। उनकी कहानियों के पात्र जीवन के जीते-जागते प्राणी हैं। उनमें सभी मानवीय दुर्बलताएँ हैं। उनकी कहानियों को सम्बन्धों की कहानियाँ कहा जा सकता है। वे नयी पीढ़ी के कलात्मक सुरुचि-सम्पन्न कहानीकार हैं।

इनकी सभी कहानियाँ मध्यमवर्गीय समाज के पारिवारिक सम्बन्धों पर आधारित हैं जो नयी पीढ़ी की विवशता-व्यथा और दर्द के अहेसास को प्रस्तुत करती हैं। 'फैंस के इधर और उधर' कहानी में उन्होंने नये और पुराने जीवन की व्याख्या फैंस के प्रतीक द्वारा बड़ी सफलता से प्रस्तुत की है। फैंस के उधर नया जीवन है और इधर पुराना जीवन। नया जीवन अपनी गति से बीत रहा है, किन्तु पुराना जीवन खीझ से भरा हुआ, स्वयं में परेशान है।"[23] ज्ञान रंजन ने अपनी कहानियों में अपने हृदय की छाप छोडी है जिससे वे स्वाभाविक और सहज हो गई हैं। आज के व्यक्ति का भी रूपायन ज्ञानरंजन ने कलात्मक ढंग से किया है।

दूधनाथ सिंह :

दूधनाथ सिंह की कहानियाँ सामाजिक धरातल पर आधारित हैं, जिनमें युग के स्वर सर्वत्र सुने जा सकते हैं। आज के युग में व्यक्ति किस प्रकार हर तरह से कट गया है, किस प्रकार अकेलेपन की यंत्रणा भोग रहा है और किस प्रकार के खालीपन में जीने के लिए मजबूर है यह सामने लाया गया है। उनकी कहानियॉ व्यक्ति के अन्तर्मन में पैठकर उसकी संश्लिष्ट मानसिकता का द्योतन करती हैं। व्यक्ति के माध्यम से उन्होंने समाज और युग को वाणी देने का प्रयास किया है।

'रीछ', 'रक्तपात', 'आइसबर्ग', 'स्वर्गवासी' आदि कहानियों में आपने पति-पत्नी या सैक्स, प्रेम सम्बन्ध, माँ-पुत्र सम्बन्धों के बदलाव, परिवार के मध्य व्यक्ति

के अकेलेपन और बेरोजगारी को उजागर किया है।

दूधनाथसिंह की आरंभिक कहानियाँ मध्यमवर्गीय पारिवारिक सम्बन्धों के विघटन की कहानियाँ हैं। इनमें 'रक्तपात' और 'आइसबर्ग' को प्रभावी कहानियाँ कहा जा सकता है। 'स्वर्गवासी' में एक बेकार युवक की टूटी मानसिकता का चित्र है। उसके बिखरे पारिवारिक सम्बन्धों को तथा परिवार में उसकी अस्तित्वहीनता को बड़ी सच्चाई के साथ प्रस्तुत किया गया है। व्यक्तिपरक और परिवेशगत यथार्थ को संवेदना के स्तर पर संयुक्त करके वे व्यक्ति को उसके सुख-दुःख, अपमान, पराजय, अकेलेपन से परिचित कराना चाहते हैं।

'सपाट चेहरेवाला आदमी', 'बिस्तर', 'दुःस्वप्न' आदि कहानियाँ इन्हीं मानवीय स्थितियों और पारिवारिक सम्बन्धों को देखने का प्रयास है। वर्तमान जीवन से उन्होंने संदर्भो को खोजा है। 'स्वानुभूति' रचना के लिए आवश्यक है, ऐसा उनका विश्वास है।

दूधनाथसिंह का मत है कि "आज कहानीकार को 'कहानी की खोज' में भटकना नहीं पड़ता है। उसकी कोई समस्या है तो 'अभिव्यक्ति की सच्चाई' की। पुरानी भाषा और पुराना शिल्प आज बेमानी हो गया है। हर नई कहानी का आरंभ, उसे झेलने की परिस्थितियाँ, उन्हें उनके सच्चे परिद्दश्यों में देख सकना कहानीकार के लिए एक चुनौती है। आज सर्जना की गहरी संभावनायें विकसित हो

रही हैं, क्योंकि अव्यवस्था हर क्षेत्र में बढ़ रही हैं।"[24]

उनकी रींछ, आइसबर्ग, रक्तपात, सपाट चेहरेवाला आदमी, शिनाख़्त, स्वर्गवासी, सुखान्त, बिस्तर, ममी तुम उदास क्यों हो कहानियाँ प्रमुख रूप से चर्चा का विषय बनी हैं।

राजेन्द्र यादव :

राजेन्द्र यादव का जन्म 29 अगस्त, 1921 में आगरा में हुआ। राजेन्द्र यादव एक महत्वपूर्ण रचनाकार हैं। रचना के माध्यम से स्थापना का कार्य तो किया ही है, आलोचना के क्षेत्र में भी उन्होंने अपनी छाप छोडी है। यथार्थ का सार्थक प्रयोग और परम्पराप्रियता को त्यागने वाले यादव जी की कहानियाँ जीवन की सही प्रतिच्छवियाँ हैं। राजेन्द्र यादव का विचार है - "कलाकार का व्यक्तित्व, उसका परिचय, उसका विश्वास और उसकी प्रतिबद्धता - सभी कुछ उसकी कला होती है। स्वयं राजेन्द्र यादव की धारणा है - "सारा इमानदार कथा लेखन औरों के यानि पात्रों के बहाने अपनी ही बात कहता है।"[25]

राजेन्द्र यादव की कहानियों में मानवीय सम्बन्धों की सही व्याख्या का प्रस्तुतीकरण हुआ है। बनते, बिखरते, बिगडते,बदलते और टूटते सम्बन्धों के विभिन्न पहलुओं की ओर उन्होंने केवल वैचारिक द्रष्टि ही नहीं दी बल्कि इनको अपनी रचनाओं का आधार भी बनाया है। उनकी सामाजिक जवाबदेही का मूल्यांकन इन सम्बन्धों के माध्यम से किया जा सकता है। उनकी कहानी में व्यक्ति

स्वर अधिक सबल है और व्यक्ति स्वर के आधार पर उनका समाज स्वर आंका जा सकता है।

उनका पहला कहानी संग्रह है 'देवताओं की मूर्तियाँ' जो 1952 में प्रकाशित हुआ। तदनन्तर उनके 'खेल-खिलौने' (1954), 'जहाँ लक्ष्मी कैद है' (1957), 'अभिमन्यू की आत्मकथा' (1959), 'छोटे-छोटे ताजमहल' (1962), 'किनारे से किनारे तक' (1963), 'टूटना' (1966), 'एक दुनिया समानान्तर' (1966) उनके अन्य कहानी संग्रह हैं। इनके अतिरिक्त उन्होंने नये कहानीकार नामक एक अन्य प्रकाशन-क्रम चालू किया जिसके अन्तर्गत स्थापित नये कहानीकारों के व्यकित्व-कृतित्व पक्षों को स्थान मिल चुका है। ये प्रकाशन हैं मोहन राकेश की श्रेष्ठ कहानियाॅं, कमलेश्वर की श्रेष्ठ कहानियाँ, रेणू की श्रेष्ठ कहानियाँ, मन्नू भण्डारी की श्रेष्ठ कहानियाँ और रांजेन्द्र यादव की श्रेष्ठ कहानियाँ।"[26]

राजेन्द्र यादव की कहानियों में 'मानव सम्बन्धों की सही व्याख्या का प्रस्तुतीकरण हुआ है। बनते, बिखरते, बिगड़ते, बदलते और टूटते सम्बन्धों के विभिन्न पहलुओं की ओर उन्होंने केवल वैचारिक दृष्टि ही नहीं दी प्रत्युत् इनको अपनी रचनाओं का आधार भी बनाया है। उनकी सामाजिक जवाबदेही का मूल्यांकन इन सम्बन्धों के माध्यम से किया जा सकता है। इनकी कहानियों में व्यक्ति स्वर अधिक सबल है और व्यक्ति स्वर के आधार पर उनका समाज स्वर आंका जा सकता है।"[27]

मोहन राकेश ने अपनी कहानी में यदि 'नये संदर्भों' को खोजा है, कमलेश्वर द्वारा कहानी में नयी दिशाओं में खोज जारी है, तो यादव ने सम्बन्धों की खोज की है।"[28] 'जहाँ लक्ष्मी कैद है', 'अभिमन्यू की आत्महत्या', 'छोटे-छोटे ताजमहल' आदि प्रतीकात्मक कहानियों द्वारा समाज, वर्ग और व्यक्ति के चरित्र के विविध पक्षों को उन्होंने बड़ी सूक्ष्मता से पहचाना है।

राजेन्द्र यादव की बहुचर्चित और सफल कहानियाँ हैं 'बिरादरी बाहर', 'जहाँ लक्ष्मी कैद है', 'खेल', 'टूटना', 'प्रतिक्षा', 'लंच टाइम', 'पंच हजारी', 'अभिमन्यू की आत्महत्या', 'छोटे-छोटे ताजमहल', 'किनारे से किनारे तक', 'पुराने माले पर नया फ्लैट', 'आत्मा की आवाज़', 'एक कमजोर लड़की की कहानी' आदि।

चन्द्रकिरण सौनरेक्सा :

श्रीमती चन्द्रकिरण सौनरेक्सा का जन्म 1920 ई. में नौशहरा जिले में हुआ। आपके पिता का नाम श्री नामफल मांगलिक है। पिता आर्य समाजी होने के कारण लड़कियों को थोड़ी बहुत शिक्षा के समर्थक थे। अतएव अपनी बच्ची की पढाई की उचित व्यवस्था की। सन् 1932 में जब नवीं श्रेणी में पढ़ रही थीं, यकायक माता की मृत्यु हो जाने के कारण आपका पढना छूट गया। फिर घर पर ही इधर-उधर से पुस्तकें माँगकर स्वयं पढीं। अपने व्यक्तिगत प्रयास से आपने प्रथमा, विशारद और साहित्यरत्न की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं। स्वाध्याय के बल पर

आपने हिन्दी के अतिरिक्त बंगला, उर्दू, गुजराती आदि विभिन्न भाषाओं का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। आपके पति श्री सौनरेक्सा हिन्दी के सुप्रसिद्ध आलोचक तथा उत्तर प्रदेश में डिप्टी कलक्टर थे।"[29]

इन्होंने ग्यारह वर्ष की आयु (सन् 1931) से ही कहानियाँ लिखना प्रारम्भ कर दिया था। इनकी सर्वप्रथम प्रकाशित कहानी 'घीसू चमार' थी, जो कलकत्ता के मासिक पत्र 'विजय' में छपी। आपको प्रारंभ से ही रवीन्द्र, बंकिम तथा प्रेमचन्द के उपन्यास एवं कहानियाँ बहुत प्रिय थी। उर्दू कहानियों के अध्ययन से आपकी यह भावना बन गयी थी कि रवीन्द्र, प्रेमचन्द बनना तो संभव नहीं, परन्तु कहानियाँ लिखना कठिन नहीं। आपकी इस दृढ़ भावना ने ही आपको कहानी लिखने की प्रेरणा प्रदान कीं। तब से अब तक चन्द्रकिरणजी लिखती रही हैं। तदुपरान्त भाई किशोरजी से प्रोत्साहन पाकर आप विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशनार्थ अपनी कहानियाँ भेजने लगीं। अब तक लगभग 400 कहानियाँ देश की विभिन्न प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाओं में छप चुकी हैं। अपनी रचना प्रक्रिया को स्पष्ट करते हुए इन्होंने लिखा है - "सामाजिक और आर्थिक दोनों रूप में मैं हिन्दू समाज की शोषित-पीडित अंग हूँ। साधारण व्यक्तित्व के स्वाभाविक विकास की माँग के लिए भी मुझे दस वर्ष की आयु से ही अपनी नन्हीं शक्तिभर संघर्ष करना पडा था तथा कुछ पढने की भूख बुझाने का एकमात्र सुगम मार्ग मुझे कुछ लिखकर भेजना ही दिखा। दूसरे, आयु बढने के साथ अपने आसपास के सीमित दायरे में जहाँ भी व्यक्ति के प्रति व्यक्ति का अथवा समाज का अन्याय दृष्टिगत होता वहाँ ही अश्वत्थामा के व्रण की

जो चिलकन अंतर में उठती थी, उसे प्रकट करने का एकमात्र उपाय लेखनी से उस शोषित जीव के प्रति सहानूभूति प्रदर्शित करना ही था। साथ ही मैंने पाया कि समाज जिन्हें एकदम नीच और हेय समझ बैठा है, अनेक दुर्बलताओं सहित भी अपने अंतर में उतने ही, कभी-कभी उनसे भी अधिक वे महान् हैं, जितने कि वे बड़े समाजपति।"[30]

श्री प्रभाकर माचवे के शब्दों में 'भारतीय जीवन की टूटती हुई 'गिरस्ती' नारी की तकलीफों और आर्थिक विषमता की रस्साकशी में जीवन का आधि-व्याधि-जर्जरित होना, यह सब बहुत ही यथार्थ रूप लेकर उनकी कहानियों में उतरा है।"[31]

'आदमखोर' आपका एकमात्र प्रकाशित कहानी संग्रह है। चन्द्रकिरणजी ने केवल कहानियाँ ही नहीं लिखीं, वरन् रेखाचित्र, उपन्यास और एकांकी भी लिखे हैं। प्रारंभ में आप कविताएँ भी लिखती थीं। 'आदमखोर' में संकलित कहानियों में पारिवारिक कहानियाँ 'गृहस्थी का सुख', 'कमीनों की जिंदगी', 'परंपरा', 'अफसर का बेटा' आदि परिवार से जुड़ी कहानियाँ हैं जिनमें तनाव, संघर्ष, विघटन आदि मौजूद हैं।

चन्द्रकिरण सौनरेक्साजी का कहानीसंग्रह 'आदमखोर' को वर्ष 1947 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का 'सेक्सरिया' पुरस्कार प्रदान किया गया। सन् 1950

में लंदन विश्वविद्यालय की बी.ए. की कक्षाओं में उनकी कहानियाँ पढ़ाई जा रही हैं।"[32]

'आदमखोर' संग्रह की पहली कहानी को चेकोस्लोवाकिया की साहित्य-अकादमी ने एशिया-अफ्रीका की सर्वश्रेष्ठ कहानी के रूप में है।"[33]

दीप्ति खंडेलवाल :

दीप्ति खंडेलवाल की कहानी का क्षेत्र तो बहुत छोटा है, लेकिन इस पर कहानीकार की पकड़ बहुत गहरी है। इनकी अधिकांश कहानियाँ पति-पत्नी के तड़कते-टूटते सम्बन्धों आदि विषयों पर हैं। इन विषयों पर अनेक कहानियों की रचनाएँ हो चुकी हैं और हो रही हैं लेकिन कहानियों में प्रेम के बनते-बिगड़ते, टूटते-सँवरते और जड़ होते स्वरूप का चित्रण निजता को लिए हुए है, जो इस महिला कहानीकार की विशेषता है।

दीप्ति खंडेलवाल नारी के आंतरिक मन को छूने और पकड़ने की विशेष क्षमता रखती है। पति-पत्नी के सम्बन्ध आज किस तरह टूट रहे हैं इसे 'क्षितिज' कहानी के आरम्भ में ही आँका जा सकता है। कहानी का अन्त क्षितिज के संकेत से किया गया है। क्षितिज की भाँति दोनों ही पास हैं, लेकिन एक-दूसरे को छू नहीं पाते। दोनों मानसिक तनाव को दूर करना चाहते तो हैं लेकिन कर नहीं पाते।

आज 'आपसी सम्बन्ध, विवाह आदि सब केवल औपचारिकता लगते हैं। निकटता में दम घुटने लगता है। क्षितिज के भ्रम को जानते हुए भी उसे पाने की लालसा उनके मन में है, लेकिन यह सब उनकी पहुँच से बाहर है।"[34]

दीप्ति खंडेलवाल की एक और कहानी 'वह' पुरूष और स्त्री दोनों में प्रेम का सम्बन्ध जड़ हो गया है और इस जड़ता को उजागर करने में कहानीकार ने नयी दृष्टि का परिचय देने की कोशिश की है। स्त्री और पुरूष से जुड़ी एक और कहानी 'शेष-अशेष' में प्रेम के उस उलझे हुए स्वरूप को उभारने की कोशिश की है जो समकालीन स्थिति से जुड़ा है।"[35]

दीप्ति खंडेलवाल ने कहानी का रचना-विधान प्रायः पति और पत्नी के टूटते-बिगड़ते प्रेम सम्बन्धों पर आधारित है जो कहानीकार की जीवन के बारे में मूल अनुभूति की गवाही है। इनकी कहानियों में नारी कभी अपने पति के अतिरिक्त एक पुरूष से सम्बन्ध स्थापित करती है तो कभी दो के साथ। 'एक पारो पुरवैया' में सुधा दो अन्य पुरूषों से सम्बन्ध स्थापित करती है और 'देह की सीता' कहानी में डॉ. शालिनी एक से। डॉ. शालिनी का पति मेजर रंजीत है और दूसरा पुरूष मेजर सहाय।"[36] दीप्तिजी ने इस विषय पर अधिकांश कहानियाँ लिखी हैं जिनमें पति और पत्नी में प्रेम स्वरूप विकृत रूप में अंकित किया गया है। 'आधार' कहानी में पति-पत्नी के सम्बन्ध को आधार बनाया गया है तो 'तनाव' कहानी में प्रेम का स्वरूप परम्परागत दृष्टि से व्यक्त किया गया है। 'क्षितिज', 'वह', 'शेष-

अशेष', 'एक पारो पुरवैया', 'देह की सीता', 'अर्थ', 'मोह', 'आधार', 'आवर्त', 'तनाव और आत्मघात' कहानियों में प्रेम के उलझते-सुलझते, बनते-बिगडते सम्बन्धों को उजागर करने का प्रयत्न किया है और प्रेम का स्वरूप कभी परम्परागत है तो कभी इससे हटकर आधुनिक है। दीप्ति खंडेलवाल की इस विषय पर पकड़ इतनी गहरी है जो इन्हें एक सफल महिला कहानीकार के रूप में स्थापित करती है।

राजी सेठः

राजी सेठ का जन्म 1935 में उत्तर प्रदेश के नौशहरा में हुआ। अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. की उपाधि प्राप्त करने के बाद आपने तुलनात्मक धर्म और भारतीय दर्शन पर गुजरात विद्यापीठ से विशिष्ट अध्ययन किया। सन् 1975 से आपने लेखक-जीवन का आरंभ किया। अब तक आपके दो कहानी संग्रह 'अन्धे मोड़ से आगे' तथा 'तीसरी हथेली' प्रकाशित हो चुके हैं।

अपने लेखकीय जीवन का जिक्र करते हुए वे कहती हैं - 'मैं चाहे लेखक हूँ या नहीं भी, एक सचेत पाठक अवश्य रही हूँ, क्योंकि साहित्य से मेरा नाता कर्म का नहीं निष्ठा का रहा है। साहित्य में, जितने कुछ को मैंने पाठकीय अधिकार से स्वीकारा या उसी अधिकार से नकारा भी, एक लेखक की हैसियत से मुझमें उन मर्यादाओं का अतिक्रमण करने की समता, अपने को उतना ही साफ देख सकने

का निष्पक्ष साहस और पाठकों की रचनात्मक अपेक्षाएँ पूरी करने की सामर्थ्य भी होनी चाहिये। नहीं तो एक पाठक के रूप में लेखक से मेरी किन्हीं अपेक्षाओं का कोई औचित्य नहीं। लेखकरूप में अपनी इसी मर्यादा का एहसास - दर्दीला एहसास - इसी समय मेरे मन में है और उत्तरदायित्व के पूरे वज़न के साथ"[37]

'तीसरी हथेली' (1981) उनकी कथायात्रा के दूसरे पड़ाव का उदाहरण है। प्रस्तुत संग्रह की कहानियाँ संवेदनशील-रचनाकार मन की प्रौढ़ अभिव्यक्ति सामर्थ्य का परिणाम है। राजी जी स्त्री और पुरूष के बीच के मर्म को सूक्ष्म भेद की ओर इंगित करते हुए कहती हैं - 'उनके व्यक्तित्व के उन घटकों की ओर इशारा करता है जो दोनों में जीवन को देखने और समझने के रवैये को भिन्न कर देते हैं और उसी अनुपात में लेखन के भेद को भी रेखांकित करते हैं।"[38]

। 'उसका आकाश' राजी शेठ की यांत्रिक व्यस्तता के युग में उपेक्षित एक पिता की कहानी है। बेटा कर्तव्य के स्तर पर उसकी देखभाल भी करता है। परंतु सब की अपनी व्यस्तता है। वस्तुतः आज के युग में बूढ़े माता-पिता की स्थिति अत्यंत दयनीय हो गयी है। ऐसे लोग यदि अपाहिज भी हों तो हालत और भी बदतर होती है।[37]

राजी सेठ की कहानियों की समीक्षा करते हुए डॉ. हरदयाल ने ठीक ही कहा है- "लेखिका ने कहानियाँ लिखना परिपक्व आयु में प्रारंभ किया। यही

कारण है कि 'अन्धे मोड़ से आगे' और 'तीसरी हथेली' संग्रहों की कहानियों में गलदश्रु, भावुकता, किशोर रूमानियत, असंयत आक्रोश इत्यादि का सर्वथा अभाव है। ये चीजें हिन्दी ही नहीं, गुजराती या किसी भी भाषा के साहित्य की नयी कथा-लेखिकाओं में प्रायः मिलती हैं। उनका अभिगम ज्यादातर गुलाबदास ब्रोकरजी के अभिगम से तुलनीय है। राजी सेठ की कहानियों में इन चीजों का न मिलना एक दृष्टि से उनकी मानसिक परिपक्वता का प्रमाण माना जाता है।"[39]

राजी सेठ की कहानी में परिपक्वता के कारण जीवन को रच-रचकर प्रस्तुत किया गया है।

ममता कालिया :

2 नवम्बर, 1940 में वृन्दावन के मिशन अस्पताल में श्रीमती ममता कालिया का जन्म हुआ था। बम्बई, पूना, इन्दौर और दिल्ली में रहकर अपनी शिक्षा प्राप्त की।

ममता अग्रवाल और बाद मे ममता कालिया का कहानी संसार हर महिला कहानीकार के संसार की तरह ही विस्तृत न होकर सीमित है। लेकिन इस सीमित संसार में कहानीकार ने अपनी कुछ कहानियों में प्रेम के उस स्वरूप को उभारा है, जो ठण्डेपन और जलन को लिए हुए है। प्रेम के स्वरूप को निजी कोण से

निरूपित किया गया है। यह सही है कि इनकी कहानियों में राजनीतिक या सामाजिक दृष्टि नहीं उभरती, वैयक्तिक दृष्टि ही उभरती है।

ममता कालिया की 'साथ' कहानी में तिकोन के माध्यम से प्रेम के स्वरूप को आधार बनाया गया है।"[40] सुनन्दा नामक लडकी एक ऐसे व्यक्ति के पास रहती है जिसका अपनी पत्नी से अलगाव तो हो गया है, लेकिन तलाक नहीं हो पाया है। इस तरह सुनन्दा आधुनिका है जो परम्परागत मूल्यों का विरोध करती है। वह अशोक के साथ सोती है। इस तरह स्त्री और पुरूष में बिना विवाह के प्रेम के स्वरूप को उभारा गया है। इसी तरह 'अनाम' कहानी में सम्बन्ध के माध्यम से प्रेम के स्वरूप को उभारा गया है। ममता कालिया की 'निवेदन' कहानी में शिशु के माध्यम से उसकी माँ के साथ प्रेम-सम्बन्ध को स्थापित करने का प्रयास है। 'दो जरुरी चेहरे' के माध्यम से प्रेम के स्वरूप को सेक्स के माध्यम से उभारा गया है।

इनकी कहानियों में शिक्षित मध्यमवर्गीय स्त्री की आशाओं, आकांक्षाओं, संघर्षो और स्वप्नों का यथार्थ अंकन हुआ है। स्त्री के प्रति परंपरागत भारतीय द्रष्टिकोण को नकारते हुए वे पतनशील जीवनमूल्यों को आत्मसात करती हुई, उन्हें नयी सामाजिक अर्थवत्ता प्रदान करती हैं।

इनके अब तक प्रकाशित संग्रहों में 'छुटकारा', 'सीट न वह छह', 'एक अदद औरत', 'प्रतिदिन' आदि प्रमुख हैं।

सामाजिक बोध स्वातंत्र्योत्तर गुजराती कहानी की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है। पाश्चात्य प्रभाव से भारतीय जीवन पद्धति और मूल्यों में अनेक परिवर्तन आये। पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव और अपनी निर्धनता में ही विभक्त कुटुंब-भावना, वैयक्तिक अकेलापन, अजनबीपन का सूत्रपात हुआ है। पति-पत्नी सम्बन्धों का द्रष्टिकोण भी बदल चुका है। आज पुरानी और नयी पीढियों का संघर्ष भी एक नई समस्या के रूप में उभरकर आया है। साथ-साथ प्रेम-सम्बन्धों, आपसी विचारों में परिवर्तन, नारी का स्वावलंबीपन आदि आ चुका है। इन कहानियों के विषय में निराशा, उदासीनता, वैयक्तिकता, घुटन, अतृप्तता, तनाव, विघटन आदि मुख्य विषय बन चुके हैं। गुजराती कहानियों का लेखक भी व्यक्ति-व्यक्ति के बीच जो कुछ तेजी से उभर रहा है और तेजी से बदल रहा है उसी को व्यक्त करता है। हिन्दी की भाँति गुजराती कहानी में भी लघुकथा और व्यंग्यकथा के रूपों का विकास हो रहा है। लघुकथा में नवलिका के सभी लक्षण होते हुए भी लाघव का विशेष गुण होता है, जबकि व्यंग्य-कथा का प्राण व्यंग्य तत्व होता है, इसी प्राण तत्व के कारण वह अन्य से अपनी अलगता साबित कर पाती है। गुजराती लघुकथा में मोहनलाल पटेल विशेष उल्लेखनीय हैं और लघु व्यंग्य कथा के लिए विनोद भट्ट, जो अभी गुजराती दैनिक 'गुजरात समाचार' में 'मगनुं नाम मरी' जो व्यंग्य कथा पर ही आधारित कॉलम लिखते हैं। विनोद भट्ट की व्यंग्य कथाओं की विशेषता यह है कि व्यंग्य का अंत हो जाने पर भी उनके ध्वनि तरंग नये परिणाम में विस्तरित होते रहते हैं। हिन्दी के व्यंग्य कथा लेखकों में श्रीनिवास जोशी, शरद जोशी, विष्णु प्रभाकर, सुरेश अवस्थी आदि मुख्य हैं।

हिन्दी भाषा का फलक बहुत बड़ा है। हिन्दी कहानी मध्यप्रदेश में भी लिखी जाती है, इस द्रष्टि से हिन्दी का विशाल क्षेत्र है। हिन्दी कहानियों से सम्बन्धित कई आन्दोलन हुए। नयी विचारधाराएँ आई और उनमें परिवर्तन हुए। यही कारण है कि हिन्दी कहानी में जीवन के यथार्थ, आदर्श, भोगे हुए क्षण आदि के विपुल चित्र हैं। जबकि गुजराती कहानी में यह क्षेत्र छोटा और सीमित है। फिर भी हिन्दी कहानियों की तरह गुजराती कहानियों में जीवन के विभिन्न रूपों एवं पक्षों का चित्रांकन हुआ है।

साठोत्तरी हिन्दी अपने क्षेत्र में सुप्रतिष्ठित पुराने-नये लेखकों में जैनेन्द्र कुमार, विष्णु प्रभाकर, रामेश्वर शुक्ल, अंचल, मोहन राकेश, कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव, रामदरश मिश्र, धर्मवीर भारती, भीष्म साहनी, शिवप्रसाद सिंह, शैलेष मटियानी, यशपाल, इलाचन्द्र जोशी, ममता कालिया, म दूधनाथ सिंह, रघुवीर सहाय, निर्मल वर्मा, महिपसिंह, अज्ञेय, शानी, मन्नू भंडारी, मृदुला गर्ग, राजी शेटी, कृष्णा सोबती, प्रतिमा वर्मा, मेहरुन्निसा परवेज़, चन्द्रकिरण सौनरेक्सा, सुधा अरोड़ा, मार्कण्डेय, भगवतीचरण वर्मा, फणीश्वरनाथ रेणू, रांगेय राघव आदि हैं। इन कहानीकारों की कहानियों में जीवन के विविध रूप देखे जा सकते हैं।

साठोत्तरी गुजराती के सुप्रतिष्ठित कहानीकारों में जयन्त खत्री, जयंती दलाल, पन्नालाल पटेल, रघुवीर चौधरी, किशोर यादव, चन्द्रकान्त बक्षी, मधु

राय, रावजी पटेल, गुलाबदास ब्रोकर, ईश्वर पेटलीकर, सुरेश जोशी, शिवकुमार जोशी, विनोद भट्ट, प्रियकान्त परीख, गिरीश गणात्रा, अवंतिका गुणवंत, शैलेष मटियानी, स्नेहरश्मि, धीरूभाई ठाकर, रामजी कड़िया, जोसेफ मेकवान, देवजीभाई खोखर, ज्योति थानकी, वर्षा अडालजा, भोळाभाई पटेल, धीरूबेन पटेल आदि ने अपने-अपने कहानी संग्रहों के द्वारा गुजराती कहानियों में अपना स्थान मजबूत किया है।

इनमें जिन-जिन कहानीकारों की वे कहानियाँ जो परिवार से सम्बन्धित हैं और जिन्हें मैंने अपनी अध्याय सामग्री के रूप में स्वीकार किया है, उनका संक्षिप्त साहित्य परिचय, कहानी संग्रह और कहानी आदि को इस अध्याय में समाविष्ट करने का प्रयत्न किया है।

***

सन्दर्भ सूचि

1. रघुवीर चौधरीनी लघुनवलो - कंचन पटेल - पृ. 101
2. रघुवीर चौधरीनी लघुनवलो - कंचन पटेल - पृ. 121
3. सं. उमाशंकर जोशी, सर्जन की आंतरकथा - पृ. 110
4. पारूल राठोड - मधुरायनी वार्ताकला विशे - पृ. 49
5. डॉ. विजय शास्त्री - टूंकी वार्ता - पृ. 90
6. अमृतलाल याज्ञिक - गुलाबदास ब्रोकर - उछेर, घड़तर, व्यक्तिरेखा - पृ. 1
7. डॉ. लता एस. सुमन्त - साठोत्तरी और गुजराती कहानियॉं : एक तुलनात्मक अध्ययन - पृ. 76
8. डॉ. लता सुमन्त - हिन्दी-गुजराती कहानी में एक तुलनात्मक अध्ययन, पृ. 79 से उद्धृत
9. जगभेरू जयंति दलाल - संपादन - रघुवीर चौधरी, प्रकाश न. शाह, परेश नायका, रमेश र. दवे - पृ. 185
10. मडियानुं अक्षर कार्य - डॉ. नवीनचंद्र त्रिवेदी - पृ. 13
11. मडिया - वार्ता विमर्श - पृ. 64
12. अर्वाचीन साहित्यनी विकासरेखा - धीरूभाई ठाकर - पृ 300
13. जनमटीप - ईश्वर पेटलीकर - पृ. 41
14. अर्वाचीन गुजराती साहित्यनी विकासरेखा - धीरूभाई ठाकर - पृ. 302
15. अर्वाचीन गुजराती साहित्यनी विकासरेखा (भाग बीजो) - धीरूभाई ठाकर - पृ. 319
16. शिवकुमार जोशी - छलछल संग्रह - पृ. 1
17. डॉ. सन्तबख्श सिंह - नई कहानी : कथ्य और शिल्प - 135
18. नई कहानी की भूमिका - कमलेश्वर - पृ. 124
19. मन्नू भंडारी की श्रेष्ठ कहानियाँ - संपादक राजेन्द्र यादव -पृ. 2
20. शशिभूषण सिंहल - समसामयिक हिन्दी कहानी - पृ. 62
21. एक और जिन्दगी (भूमिका) - मोहन राकेश - दिसम्बर 1961
22. हिन्दी कहानी : एक अंतरंग परिचय - श्री उपेन्द्रनाथ अश्क - पृ. 258

23. नयी कहानी का ऐतिहासिक आधार - रामाश्रय सविता - पृ. 136
24. समसामयिक हिन्दी कहानी - डॉ. ज्ञानवती अरोड़ा - पृ. 66
25. समसामयिक हिन्दी कहानी - डॉ. ज्ञानवती अरोड़ा - पृ. 64
26. नई कहानी की पूर्वपीठिका - रामाश्रय सविता - पृ. 119
27. नई कहानी की पूर्वपीठिका - रामाश्रय सविता - पृ. 118
28. समसामयिक हिन्दी कहानी - डॉ. ज्ञानवती अरोड़ा - पृ. 65
29. आधुनिक हिन्दी लेखिकाएँ - डॉ. रामकली शराफ - पृ. 192
30. हिन्दी के प्रतिनिधि कलाकार - संपादक नलिनविलोचन शर्मा - पृ. 178
31. वीणा - मार्च - 1946 - पृ. 212
32. आधुनिक युग की हिन्दी लेखिकाएँ - डॉ. उमेश माथुर - पृ. 339
33. स्वातंत्र्यपूर्व महिला कहानीकारों के व्यक्तित्व और कृतित्व का समीक्षात्मक विवरण - डॉ. आलीस वी. ए. - पृ. 55
34. आधुनिकता और हिन्दी साहित्य - पृ. 123
35. कडवे सच - दीप्ति खंडेलवाल - 1975
36. कड़वे सच - दीप्ति खंडेलवाल - पृ. 51
37. अन्धे मोड़ से आगे - राजी सेठ - फ्लेप से
38. साठोत्तरी हिन्दी और गुजराती कहानियाँ : एक तुलनात्मक अध्ययन - डॉ. लता एस. सुमन्त - पृ. 89
39. सहनी संगे - हिमांशु व्होरा - भूमिका से
40. ममता कालिया - छुटकारा - 1969